किन्तु अभी और भी अधिक काम करने की आवश्यकता है।

Stop

27/4/20 start

(1)

II. अशिक्षा (निरक्षरता) (illiteracy)

निरक्षता एवं अशिक्षा की समस्या जनजातियों की एक बड़ी समस्या है भारत में जनजातिय आबादी का कुछ हिस्सा एकाकी क्षेत्र में रहता है। घुमक्कड़ की जिन्दगी व्यतीत करता है। शिकार एवं जंगली पक्षियों से अपना पेट भरता है। इन आदिवासियों के बीच की समस्या शिक्षा की समस्या बहुत ही गंभीर है।

Scanned with CamScanner

Date ___/___/______

1981 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजाति में साक्षरता 16.35% थी जबकि समान्य साक्षरता 36.23% था यद्यपि साक्षरता दर में वृद्धि हो रही है फिर भी जनजातीयों में शिक्षा का स्तर बहुत ही निम्न है। 1991 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार भारत में कुल साक्षरता 52.11% है जबकि अनुसूचित जातियों मे कुल साक्षरता 29.60% है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पूर्ण साक्षरता की दर का लक्ष्य अभी भी बहुत दूर है। झारखण्ड में शिक्षा का समान्य स्तर राष्ट्रीय स्तर से बहुत निम्न है। जनजातीय स्तर शिक्षा का स्तर भी बहुत ही निम्न है।

जनजातिय शिक्षा की समस्या समाजशास्त्रीयो एवं मानवशास्त्रियों का ध्यान आकर्षित करते है इस समस्या पर विभिन्न सर्वेक्षण, सर्वे एवं शोध कार्य हुए है। जिनके नाम प्रमुख है एस० के० बनर्जी, एम० एम० बासु, के०पी० चट्टोपाध्याय, एम० के० दास गुप्ता, टी० डी० दास आदि ने जनजातिय शिक्षा के विभिन्न पहलूओं पर विचार किया है। हिल्डोराज, इरावती कर्वे, एस० के० कोल ने भी जनजातिय शिक्षा के समस्या पर प्रकाश डाला है।

एन० के० अम्बस्था ने झारखण्ड की जनजातिय निरक्षरता ओं एवं शिक्षा पर कार्य किया है। तथा शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं पर प्रकाश डाला है इसके अतिरिक्त अन्य कई विद्वानों ने जनजातिय शिक्षा पर अपना लेख प्रस्तुत किया है जिनमें डॉ० ललिता प्रसाद विद्यार्थी, डॉ० सच्चिदानन्द, डॉ० एन० सेबवार मुख्य है।

विभिन्न अध्ययनों के आधार पर जनजातीय शिक्षा की व्याख्या निम्नलिखित संदर्भों में की जा सकती है:—

1. <u>अभिभावकों की गरीबी</u>:— जनजातिया इतनी साधनहीन है कि वे बच्चों को आर्थिक जीवन का सहभागी बना देती है। बच्चे अपने बड़ों के साथ काम करते है या अपने माता-पिता के साथ भोजन संग्रह के लिए जंगल में जाते है। यह दूसरे लोगों के मवेशियों के देख-

Scanned with CamScanner

देखभाल करते है। जिनके बदले में उन्हें भोजन मिल जाता है। शहरी क्षेत्रों में बच्चे घरेलू नौकर या नौकर के रूप में काम करते है अतः गरीब जनजातियो के बच्चे स्कूल नहीं जाते, अगर किसी तरह उनका नाम भी लिख दिया जाता है तो वे स्कूल जाना बन्द कर देते है।

2. निम्न नामांकन :— जनजातियो के बच्चो का नामांकन दर प्रीमिरी स्कूल, मिडील - स्कूल, हाई स्कूल तथा कॉलेजों में बहुत ही निम्न है। संथाल परगना क्षेत्र में नामांकन की दर बहुत ही निम्न है। :—

स्कूलों में नामांकन की स्थिति

राँची	—	69.6%
सिंहभूम	—	65.1% ~~65%~~
पलामू	—	64.8%
संथालपरगना	—	45.6%

3. पढ़ाई छोड़ने वालों का उच्च स्तर :— स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या जनजातियों में बहुत अधिक है। इसका मुख्य कारण ~~इसके~~ उनके स्कूल उनके घर से बहुत अधिक दूरी पर बनाया गया है। पढ़ाई छोड़ने का दूसरा मुख्य कारण गरीबी है। घर के लड़के परिवार के लिए अर्जन करने लग जाते है। वे यह तो मवेशी चराते है या खाद्य संग्रह के लिए माता-पिता के साथ जंगल में जाया करते है और लड़कियाँ घरेलू काम एवं छोटे-भाई-बहनों की देखभाल करती है।

4. शिक्षा की सुविधा का अभाव :— झारखण्ड की जनजातियों के गाँव में स्कूलों की मकान की हालत बहुत ही परेशानी में डालने वाली होती है। बहुत से स्कूल आकाश के नीचे है तो कुछ बरामदों में तथा कुछ छाओं में चलाए जाते है।

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

जहाँ मकान बने हुए भी है उनका मरम्मत भी नहीं हो पा रहा है। स्कूलों में ब्लैक बोर्ड, चौक, डास्टर, रजिस्टर, कॉपि किताबों का अभाव, पीने का पानी का अभाव रहता है कुछ स्कूलों में विद्यार्थी को बैठने के लिए चटाई तक नहीं है।

5. आश्रम स्कूल :— भारत सरकार के कल्याण विभाग के द्वारा आश्रम स्कूल चलाए जाते है। वे सभी आवासीय स्कूल है लेकिन इनकी संख्या बहुत ही कम है। इन स्कूलों में भोजन, पुस्तकें, तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ छात्रों को स्कूल से दिए जाते है। यहाँ क्राफ्ट क्राफ्ट की शिक्षा दी जाती है लेकिन इस तरह के स्कूलों का बहुत कम विकास हो पाया है।

6. उच्च शिक्षा :— हाई स्कूल तथा कॉलेजों की संख्या भी बहुत कम है। उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को राँची, हजारीबाग, सिमडेगा, गुमला आदि शहरों में छात्रावास की सुविधाएँ है कर किन्तु वे अपर्याप्त है। विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था है परन्तु उनकी यह शिकायत रही है कि छात्रवृत्ति की राशि अपर्याप्त है। और समय पर मिलती भी नहीं है।

7. स्त्री शिक्षा :— उच्च शिक्षा की कमी के कारण शिक्षण संस्थाओं की दूरी तथा छात्रावास का अभाव 1983 ई० तक इसके लिए दुमका में एक भी छात्रावास नहीं था इसी तरह राँची जैसे शहर में भी छात्रावास की सुविधाओं का अभाव रहा है।

8. शिक्षक :— जनजातियों में शिक्षा के विकास की मन्द गति का कारण शिक्षकों का अभाव है। प्राय एक शिक्षक एक स्कूल के आधार पर स्कूल चलाए जाते है। कई कक्षाओं में एक ही समय पर पढ़ाना शिक्षकों के लिए

संभव नहीं है।

9. भाषा :- जनजातिय शिक्षा के विकास में भाषा एक बड़ी बाधा है। अधिकतर जनजातिय भाषाएँ मौखिक है, इसीलिए इन्हें क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा दी जाती है। अतः लड़कों की पढ़ाई में रुचि कम हो जाती है।

10. पाठ्यक्रम :- प्रायः जनजातिय बच्चों के लिए वही पाठ्यक्रम है जो समान्य बच्चों के लिए है। जनजाति जंगलों एवं पहाड़ों पर प्रायः बसती है। जो देश की समान्य धारा से अलग है, वे देश का भूगोल, इतिहास, तथा राजनीति आदि सीखने में रुचि नहीं लेते है।

उपर्युक्त विश्लेषणों से यह स्पष्ट है कि जनजातिय शिक्षा की समस्या एक र गंभीर समस्या बनी हुई है इसके निदान के लिए कई तरह के कार्य सरकार द्वारा किये गए है जो निम्नलिखित है :-

Date 8/03/19

i. बच्चों के शिक्षण फी की माफी
ii. प्रैमिरी शिक्षा के स्तर पर भोजन, कपड़ा तथा पुस्तकों की व्यवस्था।
iii. हाई स्कूल स्तर पर छात्रवृत्ति की व्यवस्था
iv. हस्तकला पर आधारित आवासीय स्कूल की स्थापना
v. तकनीकी तथा शैक्षणिक संस्थान में नामांकन के लिए सुरक्षित स्थान।
vi. तकनीकी तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना
vii. विश्वविद्यालय स्तर पर भी छात्रवृत्ति की व्यवस्था

सुझाव :- जनजातीय शिक्षा के समाधान के लिए निम्नलिखित सुझाव है

1. आश्रम स्कूल की स्थापना :- प्रैमिरी (प्राइमरी) तथा हाई स्कूल स्तर पर हो रहे गिरावट को रोकने के लिए

Scanned with CamScanner

आश्रम स्कूल एवं आवासीय स्कूलों की व्यवस्था इन सभी क्षेत्रों में की जानी चाहिए जहाँ जनजातीय निवेश करती है।

२. **अवकाश** :— जनजातीय छात्रों के शिक्षा में रुकावट का सबसे बड़ा कारण उनका घर के कार्यों में सहयोग देना होता है। रोपनी तथा कटनी के समय घर के काम में बहुत अधिक लगे रहते हैं। अतः अवकाश की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि छात्र घर का आवश्यक कार्य छुट्टियों में कर सकें।

३. प्राइमरी स्कूल कम्प्लेक्स मीडिल स्कूल की स्थापना होनी चाहिए।

४. स्कूलों की संख्या में वृद्धि भी होनी चाहिए।

५. स्कूल भवनों का निर्माण भी आवश्यक है।

६. प्रीप्राइमरी स्कूलों की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

७. छात्रों के लिए छात्रावास की व्यवस्था :— जनजातीय क्षेत्र में कुछ केन्द्रीय विद्यालयों की स्थापना हुई है लेकिन वहाँ जनजातीय बच्चों की कमी है। क्योंकि छात्रावास की सुविधा का अभाव है अतः जनजातीय छात्रों के लिए छात्रावास की व्यवस्था आवश्यक है।

८. लड़कियों के लिए विशेषकर छात्रावास की व्यवस्था विभिन्न स्तरों पर किया जाना चाहिए।

९. **छात्रवृत्ति** :— छात्रवृत्ति की राशि मूल्य सूचकांक से जुड़ा हुआ होना चाहिए।

१०. **छात्रवृत्ति का वितरण** :— छात्रवृत्ति मिलने पर प्रायः छात्रों को विलम्ब होता है। अतः गुजरात सरकार द्वारा की गई व्यवस्था सभी राज्यों में होनी

Scanned with CamScanner